राग माझ

पंजाब के माझे क्षेत्र की लोक धुन से माझ राग विकसित हुआ। भारतीय संगीत में इस राग का कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। राग माझ भारतीय संगीत को गुरू साहिबान की अनुपम देन है। आत्मिक सफर तय करती माझ में से निकलती आत्मा खुशी बिखेरती अनहदनाद लगाती है, बिछोड़े की पीड़ा महसूस करती हुई ejk eu ykp xj njlu rkbAA fcyi dj pkf=d dh fuvkbAA का विलाप करती है। गुरू अरजन देव जी का बारहमाहा भी इसी राग में है। केवल पंजाब का राग होने के कारण इसमें भक्तों की बाणी नहीं है।

आरोह – स रे, म प, नी सं

अवरोह – सं नी ध प, ध म ग म, रे प ग रे, ग स रे नी स।

स्वर – दोनों गंधार दोनों निषाद, अन्य शुद्ध
आरोह में गंधार और धैवत वर्जित।

थाट – खमाज

जाति – औड़व–सम्पूर्ण

समय – रात का प्रथम प्रहर

वादी – ऋषभ

संवादी – पंचम

मुख्य अंग – प, ध म ग म, रे प, म ग रे, ग स रे नी स।

स्वर विस्थार –
1. स रे नी नी स, नी ध़ प़ प़ नी स, रे म प, ध म ग रे, प म ग रे, रे, प ध म ग रे, म ग म, रे प म ग रे, ग स रे नी स।
2. प प ध प, म ग रे, रे म प, ध म प नी सं, गं रें, मं, गं रें, गं सं रें नी सं, रें नी ध प, म प सं नी ध प, म ग म, रे प ग रे, ग स रे नी स।

माझ महला ५ ॥ (१०३)

अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥१॥ सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरि नामु वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोए न जाइ जीउ ॥२॥ दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥३॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥ करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥४॥२३॥३०॥

माझ महला ५ ॥ (१०३)

तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ॥१॥ तुमरी fØपा ते तुधु पछाणा॥ तूं मेरी एट तूंहै मेरा माणा॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ॥२॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ॥३॥ नामु धिआइ महा सुखु पाइआ॥ हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१॥

राग माझ

(1) तीन ताल पंजाबी ठेका

LFkkbZ

								रेम	पध	म	प	मग	म	ग	रे
								अं0	00	म्रि	त	बा	0	णी	0
प	—	गरे	गस	रे	ऩी	स	—	स	स	स	रे	ऩी	ध़	प़	—
0	0	हरि	हरि	ते	0	री	0	सु	णि	सु	णि	हो	0	वै	0
—	प़प़ध़	—म़	—प़	ऩी	—	स	—	रे	रे	म	प	नी(सं)	नी	—	—
0	परम	0ग	0ति	मे	0	री	0	ज	ल	नि	बु	झी	0	0	0
—	सं	संसं	संसं	रें	नी	सं	—	संसं	संसं	रेंरें	रें	रेंरें	नी	ध	प
0	सी	तलु	होइि	म	नू	आ	0	00	सति	गुर	का	द0	र	स	नु
धप	मप	ध	प	मग	म	ग	रे								
पा0	00	इे	जी	उ0	0	0	0								
x				2				0				3			

vUrjk

								—	रे	—म	—प	नी(सं)	नी	—	—
								0	सू	0खु	0भ	इया	0	0	0
—	संसं	सं	संसं	रें	नी	सं	—	—	रें	रें	पं	मंगं	मं	गं	रें
0	दुखु	दू	रिप	रा	0	ना	0	0	सं	त	र	स0	न	ह	रि
—	गंरें	गं	सं	रें	नी	सं	सं	—	संसं	सं	रें	नी	—	ध	प
0	ना0	मु	व	खा	0	ना	0	0	जल	थ	ल	नी	0	रि	भ
धप	मप	ध	प	मग	म	ग	रे	—	रेरे	म	प	नी	नी	सं	सं
रे0	00	स	र	सु0	0	भ	र	0	बिर	था	0	को	0	इ	न
संरें	संनी	ध	प	पनी	धप	मग	मरे								
जा0	00	इे	जी	उ0	00	00	00								
x				2				0				3			

dhrZudkj Mk- xqjuke flag ifV;kyk

(2) तीन ताल

LFkkb%

											रे	—	म	—	प
											तूं	0	मे	0	रा
नी	नी	सं	सं	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	ऩी	—	स	—	प
पि	ता	0	0	तूं	है	मे	रा	मा	0	ता	तूं	0	मे	0	रा
म	ग	म	म	ग	रे	ग	स	रे	ऩी	स					
बं	0	ध	पु	तूं	0	मे	रा	भ्रा	0	ता					
x				2				0				3			

vrjk%

								म	—	म	म	प	—	नी	—
								तूं	0	मे	रा	रा	0	खा	0
सं	सं	सं	सं	रें	नी	सं	—	—	रें	नीनी	नी	ध	—	प	—
स	भ	नी	0	था	0	ई	0	0	ता	भउ	0	के	0	हा	0
प	ध	म	—	गम	ग	रे	स	रे	ऩी	स					
का	0	ड़ा	0	जी	0	0	0	उ	0	0					
x				2				0				3			

dhrudkj çk% gjpn flg